क्या वस्त्र और माला जपना ही भक्त की पहचान है?

bhaskar.com/news/ABH-bhaskar-editorial-5341949-NOR.html

June 6, 2016

5 वर्ष पहले

अक्सर हम किसी न किसी को भक्त उद्घोषित कर देते हैं। यह हम क्यों करते हैं? क्योंकि हम देखते हैं कि वे मन्दिरों मस्जिदों में चक्कर लगाते हैं। माला जपते हैं, क्रिया कर्म करते हैं, भगवान का नाम लेते हैं, धार्मिक वस्त्र पहनते हैं। उनका संगीत भक्तिमय होता हैं और भोजन प्रसाद। पर क्या यह भक्ति के चिह्न हैं? क्या भगवान इन्हें स्वीकार करते हैं ?

अगर हम श्रीमद भगवत् गीता में खोजें और उसके बारहवें अध्याय में झांकें। अध्याय का नाम ही भक्ति योग है। ये भक्ति की क्या परिभाषा हमें देता हैं?
भक्तों का वर्णन ऐसे शुरू होता है-

अद्वेष्टा सर्वभूतानां किसी भी प्राणी से द्वेष नहीं, चाहे वो मच्छर हो या कोई कीट। किसी से ज्यादा, किसी से कम प्रेम नहीं, चाहे वो मां हो या सास, बेटी हो या बहू। घृणा, नफरत, गुस्सा, गिला यह एक भक्त के बस की बात नहीं। सब से प्रेम, समभाव ही उसके लक्षण हैं। पर ऐसा क्यों? सबसे बराबर प्रेम कैसे हो सकता है और क्यों हो?

यह सोचने कि बात है- क्या हम किसी एक व्यक्ति से प्रेम कर सकते हैं? जरा गौर कीजिए- अगर हम किसी एक से प्यार करते हैं और किसी अन्य से नहीं, तो वो क्यों? क्योंकि हमें उस व्यक्ति से कुछ मिल रहा है, जो दूसरे से नहीं मिल रहा। वरना उससे ज्यादा चाह क्यों? यह चीज, जो हमें मिल रही है, वो शारीरिक हो सकती है या मानसिक या बौद्धिक, पर हमें जरूर इससे कुछ मिल रहा है जो दूसरे से नहीं मिल रहा। अगर उस व्यक्ति ने हमें वह चीज देने से इनकार कर दिया, मुकर गया हो तो हम उससे नफरत करने लग जाएंगे। उससे, जिससे हम अभी प्यार जता रहे थे, जिससे मोहब्बत इकरार कर रहे थे, वो जो आंखों का चांद था, द्वेष का पातक बन जाएगा। क्या हम जीवन में यह देखते नहीं? अख़बार में खबरें पढ़ते हैं- लड़के ने प्रेमिका पर तेज़ाब फेंक दिया, दोस्त ने दोस्त का कत्ल कर दिया, जब भाई-भाई लड़ते हैं तो दुश्मनों से बदतर हो जाते हैं। जहां प्रेम है, वहां नफरत के आसार हैं। यह प्रेम नहीं है, यह बहुरूपिया है। प्रेम भिन्न

है, सौम्य है, शुद्ध। प्रेम यानी संभावना। यह प्रेम सारे लोगों से अलग-अलग नहीं होता, क्योंकि वह इच्छापूर्ति पर निर्भर नहीं होता। यह निर्मलता से पैदा होता है। हर हाल में समान होता है। अाध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है, भक्ति का प्रतीक है।

मैत्री- ऐसा व्यक्ति सब का मित्र है। वह सबकी खुशहाली चाहता है, इसलिए वह कठिन निर्णय लेने से डरता नहीं। जैसे एक डॉक्टर इंजेक्शन देने से मुकरता नहीं, काटने से भी नहीं? एक भक्त वह करेगा, जिसकी आवश्यकता है, न कि जिसमें खुद की खुशी है।

करुणा- जीवन में हम कई लोगों से बेहतर परिस्थिति में हैं। क्यों? पता नहीं। पर जहां हम मदद कर सकते हैं, जरूर करें, अक्सर हम कुछ कर नहीं सकते। उस फासले को हम करुणा से भरते हैं। जहां कुछ कर नहीं सकते, दर्द तो महसूस कर सकते हैं, हमदर्दी तो जता सकते हैं।

क्षमा- ऐसा शब्द है, जो बहुत ही गलतफहमी का शिकार है। अगर किसी ने हमें दगा दिया, हमारा भरोसा तोड़ दिया तो क्या हमें फिर से उस आदमी पर विश्वास करना चाहिए? क्या वह क्षमा होगी? अगर एक सांप ने हमें डंसा तो क्या हम वापस उसे गोद में खिलाएंगे? यह क्षमा नहीं मूर्खता होगी। क्षमा यानी यह सच पहचानना, प्रत्येक व्यक्ति अथवा जीव अपने-अपने स्वभाव के अधीन है। कोई अपने स्वभाव से परे काम नहीं कर सकता। सब स्वभाव के गुलाम हैं, तो अपने स्वभाव से विपरीत कोई कुछ कर ही नहीं सकता। बिल्ली अपनी तरह से व्यवहार करेगी, कुत्ता अपनी तरह से, संत अपने तरह का, पापी अपनी तरह का, मां अपनी तरह, सास अपनी। हर एक का स्वभाव है और वह ऐसे ही कर्म करेगा। यह सत्य जो सीख गया वह क्षमा करता है। उसे न गिला न शिकवा, सिर्फ सबके साथ सही आचरण, क्योंकि सबकी सही पहचान, जैसे हम शेर की सराहना करते हैं पर पास नहीं जाते।

डॉ. जानकी संतोक
वेदान्त स्कॉलर, मुंबई